इस्लामिक स्टेट का पुनरुभार

इस Editorial में The Hindu, The Indian Express, Business Line आदि में प्रकाशित लेखों का विश्लेषण किया गया है। इस लेख में इस्लामिक स्टेट का पुनरुभार व उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। आवश्यकतानुसार, यथास्थान टीम दृष्टि के इनपुट भी शामिल किये गए हैं।

संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि सीरिया और इराक में 10,000 से अधिक इस्लामिक स्टेट के आतंकवादी सक्रिय है। संयुक्त राष्ट्र ने बताया है कि इस वर्ष इस्लामिक स्टेट के हमलों में काफी वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद विरोधी प्रमुख **व्लादिमीर वोरोन्कोव** (Vladimir Voronkov) ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वक्तव्य दिया कि युद्धक्षेत्र में इस्लामिक स्टेट की हार के बावजूद इस आतंकवादी संगठन के छोटे-छोटे स्लीपर सेल स्वतंत्र रूप से पश्चिम एशिया, अफ्रीका सहित कई अन्य देशों में सक्रिय है। वोरोन्कोव के अनुसार, कई अफ्रीकी देशों में इस्लामिक स्टेट का प्रभाव है। विशेषकर लीबिया, कांगो, माली, नाइजर और मोजाम्बिक में इनका बड़ा नेटवर्क है। पश्चिम अफ्रीका में यह संगठन वैश्विक प्रचार का एक प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

ध्यातव्य है कि विगत कुछ दिनों में भारत से भी इस्लामिक स्टेट के कई आतंकवादियों को उस समय गिरफ्तार किया गया जब वह **लोन वुल्फ अटैक** (Lone Wolf Attack) करने की योजना बना रहे थे। भारत से इस्लामिक स्टेट के आतंकियों की गिरफ्तारी चिंता का विषय है क्योंकि आतंकवाद से प्रभावित शीर्ष देशों की सूची में भारत भी शामिल है।

विश्लेषकों का मानना है कि बगदादी की मौत ने इस आतंकवादी संगठन को कमज़ोर किया है किंतु इसे समाप्त मानना एक भूल साबित हुई। इसलिये इस्लामिक स्टेट को आतंकवाद के एक वाहक के रूप में विश्व के समक्ष अभी भी खतरे के रूप में देखा जा रहा है।

इस्लामिक स्टेट: पृष्ठभूमि

- इस्लामिक स्टेट की स्थापना जमात अल-तौहिद वल जिहाद के नाम से वर्ष 1999 में हुई मानी जाती है। अमेरिका पर वर्ष 2001 में हुए आतंकवादी हमलों के बाद अमेरिका ने अल-कायदा को समाप्त करने के लिये इराक में प्रवेश किया।
- इस मौके का लाभ उठाकर इस्लामिक स्टेट ने अपनी स्थिति को मज़बूत किया। अरब स्प्रिंग के समय संपूर्ण मध्य-पूर्व की तानाशाही सरकारें गंभीर संकट झेल रहीं थी। वर्ष 2011 में सीरिया में असद की तानाशाह सरकार के खिलाफ भी विरोध प्रदर्शन हुए, जो शीघ्र ही गृह-युद्ध में बदल गया।
- इराक भी सद्दाम हुसैन की मृत्यु के बाद अस्थिरता की स्थिति से जूझ रहा था। इराक और सीरिया की सुभेद्य स्थिति उग्रवादी एवं आतंकवादी संगठनों को उर्वर भूमि उपलब्ध करा रही थी। इसी का लाभ उठाकर इस्लामिक स्टेट ने वहाँ के विभिन्न क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया तथा वर्ष 2014 में मोसूल पर कब्ज़ा करने के पश्चात् अपने संगठन का नाम परिवर्तित कर इस्लामिक स्टेट ऑफ़ इराक एंड सीरिया (ISIS) कर लिया।
- पश्चिम एशिया प्रमुख रूप से इस्लामी मान्यताओं को मानने वाला क्षेत्र है। किंतु इस क्षेत्र में इस्लाम के भीतर ही लोग विभिन्न समुदायों यथा-शिया,

सुन्नी और कुर्द में विभाजित हैं। इस क्षेत्र में विद्यमान विभिन्न समस्याओं की जड़ में अन्य कारकों के साथ-साथ इस सांप्रदायिक संघर्ष को भी एक बड़ा कारक समझा जाता है।

इस्लामिक स्टेट की शक्ति का आधार

- किसी भी संगठन को बनाए रखने के लिये आर्थिक स्रोतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस्लामिक स्टेट भी इससे भली-भाँति परिचित था। इसी पृष्ठभूमि में IS ने इराक एवं सीरिया के आयल फील्ड पर कब्ज़ा कर लिया। जिससे इस आतंकवादी संगठन को बड़ी मात्रा में धन प्राप्त हुआ।
- इसके अतिरिक्त जबरन वसूली, धार्मिक कर, सुन्नी समर्थक लोगों से आर्थिक सहायता भी इस संगठन के महत्त्वपूर्ण आर्थिक स्रोत बने।
- इस्लामिक स्टेट की सबसे बड़ी ताकत है इसकी युवाओं को आकर्षित करने की क्षमता। विदित हो कि IS ने लड़ाकों की नियुक्ति के लिये बाकायदा नियोक्ताओं की सेवाएँ ले रखी हैं।
- IS इन नियोक्ताओं को धन देता है और बदले में ये नियोक्ता सोशल मीडिया, गुप्त गोष्ठियों आदि के माध्यम से युवाओं को धर्म के नाम पर दिग्भ्रमित करते हैं और एक ऐसी लड़ाई लड़ने के लिये इन्हें प्रेरित करते हैं जिसका उद्देश्य खलिफत की स्थापना करना है।

इस्लामिक स्टेट का वैश्विक विस्तार

- वर्तमान में इस्लामिक स्टेट का प्रभाव अफ्रीका महाद्वीप के लीबिया, कांगो, माली, नाइज़र और मोजाम्बिक में स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है।
- इसी तरह से यूरोप में फ्रांस और ब्रिटेन में इसका प्रसार हो रहा है। अफगानिस्तान में इस्लामिक स्टेट के सहयोगी ने काबुल सहित देश के विभिन्न हिस्सों में कई बड़े आतंकी हमलों को अंजाम दिया है।
- हालाँकि विश्व स्तर पर तथा भारत में इसको अधिक सफलता नहीं मिली लेकिन विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान अन्य आतंकी संगठन इससे जुड़ गए हैं।
- IS ने संबद्ध संगठनों को विलायत का नाम दिया, जिसका अर्थ एक प्रशासनिक इकाई के रूप में लिया जा सकता है।

लोन वुल्फ अटैक से तात्पर्य

- इस्लामिक स्टेट के चरमोत्कर्ष के दौर में विश्व में विशेष रूप से पश्चिमी विश्व तथा पूर्वी एशिया में आतंकी घटनाओं में वृद्धि हुई। साथ ही इन घटनाओं को रोकना कठिन हो गया। इस प्रकार के हमलों को किसी व्यक्ति या एक छोटे से समूह द्वारा अंजाम दिया जाता था और इनका किसी भी आतंकवादी संगठन से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता था।
- इस प्रकार के हमलों को लोन **वुल्फ अटैक** कहा गया। इसमें आतंकी इंटरनेट तथा सोशल मीडिया द्वारा IS की विचारधारा से जुड़ता था और इंटरनेट के माध्यम से ही हमलों के लिये विशेषज्ञता प्राप्त करता था।

वैश्विक शांति को खतरा

- इस्लामिक स्टेट भले ही वर्तमान में इराक एवं सीरिया में कमजोर हो गया है तथा उसके कब्ज़े में कोई क्षेत्र भी नहीं है, इसके बावजूद वह विश्व के समक्ष एक बड़ा खतरा बना हुआ है।
- इस्लामिक स्टेट में शामिल विदेशी लड़ाके जिनकी संख्या 25-30 हजार आँकी जा सकती है, अपने देशों में वापस लौटने में सफल हुए हैं। ये लड़ाके IS की विचारधारा में विश्वास रखते हैं और अपने देश की आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती बने हुए हैं।
- भारत में IS आतंकी की गिरफ्तारी, श्रीलंका में हुए आतंकी हमले तथा इंडोनेशिया एवं फिलीपींस के आत्मघाती हमलों ने IS के खतरे से विश्व को आगाह किया है।
- इस्लामिक स्टेट के उच्च स्तर के कई आतंकियों के मारे जाने के बावजूद इसने पूर्वी अफगानिस्तान क्षेत्र में तालिबान से भी अधिक आत्मघाती हमलों को अंजाम दिया है। एशिया ही नहीं बल्कि अफ्रीका में भी IS से संबद्ध आतंकी संगठन सक्रिय हैं।
- पूर्व में नाइजीरिया का एक बड़ा आतंकी संगठन बोकोहरम भी IS से संबद्ध था लेकिन कुछ समय पूर्व इससे अलग हुई IS की एक शाखा इस क्षेत्र,

दृष्टि The Vision

विशेषकर उत्तरी नाइजीरिया में अधिक सक्रिय है।
- ध्यातव्य है कि इद्लिब, जहाँ IS सरगना बगदादी को मारा गया, तुर्की सीमा से केवल 50 किमी. की दूरी पर स्थित है, साथ ही तुर्की और सीरिया की सीमा रेखा पर कुर्दिश लड़ाके मौजूद हैं। इससे तुर्की IS के प्रति अधिक सुभेद्य हो जाता है।

इस्लामिक स्टेट और भारत

- बगदादी की वैश्विक विस्तार की कल्पना में उसने भारत को भी खुरासान प्रांत के रूप में शामिल किया था। भारत में इस्लामिक स्टेट के आतंकी का गिरफ्तार होना निश्चित ही चिंता का विषय है।
- अनुमान है कि भारत से 100-200 लोग IS में भर्ती होने के लिये सीरिया, इराक और अफ़ग़ानिस्तान की ओर गए थे। इनकी वापसी के बाद भारत में इनसे खतरा उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार के IS समर्थक भारत में युवाओं को भर्ती करने तथा स्लीपर सेल की भूमिका निभाने एवं साथ ही आवश्यकता पड़ने पर आतंक फैला सकते हैं।
- कुछ समय पूर्व भारत सरकार ने कश्मीर के विशेष राज्य का दर्जा समाप्त कर दिया है, इससे कश्मीर में तनाव की स्थिति बनी हुई है। विश्लेषकों का मानना है कि IS भारत में अपने प्रसार के लिये कश्मीर मुद्दे का दुष्प्रचार कर सकता है।
- इसके अतिरिक्त भारत में सोशल मीडिया विनियमन भी कमज़ोर है, जिससे कोई भी आतंकी संगठन भारत के युवाओं की मनोवृत्ति बदलने, उनको प्रभावित करने तथा उन्हें आतंकी घटनाओं को अंजाम देने के लिये तैयार कर सकता है।

आगे की राह

- जिस इस्लामिक स्टेट को पूरी दुनिया समाप्त मानने लगी थी, अब आतंक के एक नये कलेवर में सबके सामने है। IS के लड़ाके छोटे-छोटे समूहों में पूरे विश्व में फैल रहे हैं। वैसे भी इस्लामिक स्टेट पिछले कुछ समय से लगातार भारत को निशाना बनाने के अपने इरादों को ज़ाहिर करता आ रहा है। भारत को इसे रोकने के लिये एक्शन प्लान बनाना चाहिये।
- दरअसल, युवावस्था में व्यक्ति अभूतपूर्व ऊर्जा महसूस करता है और जिस भी दिशा में इस ऊर्जा का उपयोग किया जाए वहाँ उल्लेखनीय परिणाम दिखने को मिलते हैं, सरकार को IS की इसी नस पर चोट करनी होगी, युवाओं को IS के विचारों से दूर रखना होगा।
- सरकार यदि अपने एक्शन प्लान के तहत IS के खिलाफ़ एक जागरूकता अभियान चलाए तो यह काफी कारगर होगा, जगह-जगह सेमिनार हो युवाओं को सूफी परंपरा और वहाबी परंपरा का मर्म बताया जाना चाहिये।

प्रश्न- 'आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट का पुनरउभार भारत समेत सम्पूर्ण विश्व में आतंरिक सुरक्षा के समक्ष एक गंभीर चुनौती उत्पन्न करेगा।' समीक्षा कीजिये।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/down-but-not-out-on-islamic-state